

॥ ॐ प्रणव रुपिणीम् वन्दे ॥

अ.क्र.१०६

जय अंबे गौरी । मैय्या जय अंबे गौरी ।
तुमको निशदिन ध्यावत । हरी ब्रह्मा शिव री ।
ॐ जय अंबे गौरी॥ ६ ॥

मांग सिंदूर विराजत । टीको मृगमद को ।
उज्ज्वल से दोऊ नैना । चंद्र वदन नीको ।
ॐ जय अंबे गौरी॥ १ ॥

कनक समान कलेवर । रक्तांबर राजे ।
रक्तकुसुम बनमाला । कन्ठन पर साजे ।
ॐ जय अंबे गौरी॥ २ ॥

केहरी वाहन राजत । खड्ग खपर धारी ।
सुरनर मुनिजन सेवत । तिनके दुःख हारी ।
ॐ जय अंबे गौरी॥ ३ ॥

कानन कुंडल शोभित । नासाग्रे मोती ।
कोटिक चंद्र दिवाकर । राजत समज्योति ।
ॐ जय अंबे गौरी॥ ४ ॥

शुंभ निशुंभ विदारे । महिषासुर घाती ।
धुम्र विलोचन नैना । निशदिन मदमाती ।
ॐ जय अंबे गौरी॥ ५ ॥

चंड मुंड संहारे । शोणीत बीज हरे ।
मधुकैटभ दोऊ मारे । सुर भय हीन करे ।
ॐ जय अंबे गौरी॥ ६ ॥